

पंचवटी खंडकाव्य में निरूपित शूर्पणखा-प्रसंग का मिथक

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म १८८६ में और मृत्यु १९३४ में हुआ था। हिंदी साहित्य के इतिहास में गुप्तजी महत्वपूर्ण कवि हैं। उन्हें साहित्य जगत में 'दददा' के नाम से भी संबोधित किया जाता था। उनकी 'भारत-भारती' रचना के लिए महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी भी दी थी। उनकी जन्म जयंती ३ अगस्त को हर वर्ष 'कवि दिवस' के रूप में मनाया जाता है। भारत सरकार ने उन्हें सन् १९५४ में पद्मभूषण से सम्मानित किया था। उनके साहित्य सर्जन की बात करें तो उनके पास से हमें दो महाकाव्य 'साकेत' और 'यशोधरा' प्राप्त होते हैं, साथ ही १९ जैसे खंडकाव्य उन्होंने लिखे हैं। जिसमें 'जयद्रथ वध' 'भारत-भारती' 'द्वापर' 'नहुष' 'सिद्धराज' 'गुरुकुल' 'जय भारत' 'किसान' 'विष्णुप्रिया' 'उर्मिला' और 'पंचवटी' आदि प्राप्त हुए हैं। उनके समग्र साहित्य मौलिक और अनुवादित रचनाओं का संकलन करके 'मैथिलीशरण गुप्त ग्रन्थावली' नाम से लेखक और संपादक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल ने प्रकाशित की है, जो १२ भागों में विभाजित है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से गुप्त जी ने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य-भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया। इस तरह ब्रजभाषा जैसी समृद्ध काव्य-भाषा को छोड़कर समय और संदर्भों के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने इसे ही अपनी काव्य-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। 'साकेत' के लिए उन्हें मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुआ है, यह उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। इस उपरांत पत्रों का संग्रह 'पत्रावली' भी प्राप्त होता है। संस्कृत नाट्यकार भास के नाटकों के आधार पर से गुप्त जी ने मौलिक नाटक दिए हैं। 'स्वप्नवासवदत्ता' पर से 'अनघ', 'प्रतिमा' पर से 'चरणदास', 'अभिषेक' पर से 'तिलोत्तमा' 'आविमारक' पर से 'निष्क्रिय प्रतिरोध' यह चार नाटक मिलते हैं।

उनकी काव्यगत विशेषताएं देखे तो, उनकी रचनाओं में से गांधीवाद, राष्ट्रीयता, गौरवमय अतीत का इतिहास और भारतीय संस्कृति की महता, पारिवारिक जीवन और भारतीय पतिव्रता नारी तथा प्रकृति वर्णन प्राप्त होता है।

संस्कृत साहित्य में हमें दो महाकाव्य प्राप्त होते हैं। एक वाल्मीकिकृत 'रामायण' और दूसरा 'महाभारत' जो वेद व्यास द्वारा रचा गया है। ये दो महाकाव्य विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवादित हुए हैं। इन दोनों महाकाव्य के आधार पर से अनेक साहित्यकारों ने रचना की है। संस्कृत भाषा में से उतरी हुई हिंदी भाषा में भी भारतेंदु युग से रामायण पर आधारित अनेक साहित्यिक रचना हुई हैं। हिंदी साहित्य में गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' सबसे प्रसिद्ध हुई, जो वाल्मीकि 'रामायण' का रूपांतरण है।

कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी रामायण का आधार लेकर 'साकेत' जैसा महाकाव्य रचा, जो नव सर्ग में विभाजित है। इसमें लक्ष्मण पत्नी उर्मिला की व्यथा को चित्रित किया है, साथ ही उन्होंने रामचरित्र को अच्छी तरह से निरूपित किया है। ऐसा ही एक दूसरा काव्य जो रामायण की कथावस्तु पर आधारित है वह है 'पंचवटी', जो सन् १९३१ में उन्होंने पूर्ण किया। मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' एक खंडकाव्य है। वैसे देख तो यह खंडकाव्य छोटे-छोटे १२८ भाग में लिखा हुआ है। यह रचना 'रामायण' के अरण्यकांड पर आधारित है। दंडकारण्य में गोदावरी नदी के पास पंचवटी वन स्थित है। आरंभ में ही गुप्त जी ने पूर्वाभास के तीन छोटे टुकड़ों में पिता दशरथ से राम को वनवास जाने की आज्ञा मिली है। राम के साथ पत्नी सीता और छोटे भाई लक्ष्मण भी

चौदह वर्ष के वनवास को चल पड़े हैं। इस घटना को बहुत ही संक्षिप्त में गुप्ता जी ने निरूपित किया है। 'पंचवटी' की शुरुआत प्रकृति वर्णन से होती है। आरंभ इन पंक्तियों से होता है,

चारु चन्द्र की चंचल किरणों

खेल रही हैं जल-थल में,

स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है

अवनि और अम्बरतल में।

चाँदनी बिछी हुई है इससे ज्ञात होता है कि रात्रि का प्रहार चल रहा है। पंचवटी वन में सुंदर पर्ण-कुटीर बनी हुई है। उसके सामने ही एक शिला है जिस पर एक धनुर्धर जागता बैठा है। इस कुटीर में ऐसा क्या होगा, जो अपना सब कुछ त्याग कर वह इस कुटीर का प्रहरी बना है?

स्वामी-संग तीन लोक की लक्ष्मी इस कुटीर में रहती है। अभी रात्रि का समय चल रहा है और लक्ष्मण कुटीर की रक्षा करके बैठे हैं। बैठे-बैठे वह विचार में मग्न हो जाते हैं कि अभी तेरह वर्ष जो बीत चुके हैं पर मानो वह कल की ही बात हो। वह भूतकाल को याद करते हैं, साथ ही भविष्य में क्या होगा इस विचार पर तर्क-वितर्क करना शुरू कर देते हैं। लक्ष्मण को यह प्रकृति की गोद इतनी भा गई है कि उन्हें वनवास अच्छा लगने लगा है। वह कहते हैं कि,

मनःप्रसाद चाहिए केवल,

क्या कुटीर फिर क्या प्रासाद?

घर लौटने के बाद उन्हें यह खुशी वापस प्राप्त नहीं होगी। वह आंखें बंद कर पत्नी उर्मिला के बारे में भी सोचते हैं, कि वह बिचारी मेरे लिए व्यर्थ ही रोती होगी। फिर जब वह आंख खोलते हैं, तब एक हास्यवदनी बाला उनके सामने खड़ी हुई है। लक्ष्मण अचंभित हो जाते हैं, इतनी रात गये यह अकेली अबला इस वन में निकल पड़ी है ! लक्ष्मण सामने से कुछ नहीं बोलते। फिर वह रमणी खुद ही आकर लक्ष्मण से बोलती है। लक्ष्मण मात्र इतना पूछते हैं कि, तुम कौन हो ? फिर रमणी कहती है कि केवल इतना ही पूछा कि तुम कौन हो, क्या चाहती हो यह नहीं पूछा। नई अपने आप को अतिथि बताती है और कुछ आतिथ्य मिलेगा क्या ऐसा पूछती है। तब लक्ष्मण कहते हैं कि, मैं वनवासी हूँ, निर्धन हूँ मैं तुम्हारा क्या अतिथ्य करूंगा। रमणी पूछता है कि ऐसे वृद्धि क्यों बने हुए हैं बोलो तुम्हें क्या चाहिए तुम जो चाहोगे वह मैं तुम्हें दे सकती हूँ। इस निष्काम तपस्या से तुम्हें फल मिलेगा उसका क्या करोगे लक्ष्मण उसे रक्षित कर कर रख देंगे और फिर योग्य पात्र को खोजेगे लेकिन रमणी ने तो पत्र ढूँढ लिया है लक्ष्मण पूछते हैं कि वह कौन है तब बताती है कि वह तुम हो लक्ष्मण सुनकर भड़क जाते हैं और कहते हैं,

" पाप शान्त हो, पाप शान्त हो,

कि मैं विवाहित हूँ बाले ! "



Volume - 3

रमणी कहती है कि पुरुष दो-दो पत्नी वाले नहीं होते। सब शास्त्र जो नरने बनाए हैं उसमें सब बंधन नारी को ही हैं। नर अपने लिए सारी सुविधा पहले ही कर बैठे हैं। दोनों की बातचीत चल रही है और उतने में ही सुबह हो जाती है। सीता जी उठ जाती है। रमणी ने सीता के रूप को देखा और फिर अपनी ओर देखने लगी लेकिन अपने आभूषणों से वह भ्रमित हो गई कि मुझसा सुंदर कोई नहीं। सीता ने रमणी और लक्ष्मण को देखा। लक्ष्मण ने सीता जी को प्रणाम किया। सीता ने लक्ष्मण और रमणी की सारी बातें सुन ली हैं। वह नारी को कहती है कि तुम खिन्न न हो मेरे देवर ऐसे ही हैं ब्याही बहुत छोड़कर यहां हमारे साथ वन में चले आए हैं लेकिन तुम्हारी इच्छा है, तो मैं इन्हें मनाऊंगी सीता रामणी का पक्ष लेकर लक्ष्मण को उसका स्वीकार करने के लिए समझाया। अपनी बहन उर्मिला की चिंता न करने के लिए कहा उर्मिला तुम्हें दोष नहीं देगी परंतु तुम सुखी हो यह सुनकर पीछे सच्चा संतोष पाएगी। फिर सीता आर्यपुत्र यानि पति राम को उठकर देखने के लिए कहती है। रमणी राम को देखती है राम उसे पूछते हैं तुम कौन हो और क्या चाहती हो। तब वह अपने परिचय में कहती है,

मैं अपने ऊपर अपना ही

रखती हूँ अधिकार सदा ,

जहाँ चाहती हूँ करती हूँ

मैं स्वच्छन्द विहार सदा।

यदि तुमने पूछा है कि तुम क्या चाहती हो तो सुनो तुमने बड़ी बड़ाई है, दृढ़ता और मृदुता भी है। अब तुम ही पहनो मेरी जयमाला-सी वरमाला। मुझे ग्रहण कर तुम सीता के भू-भंग भूल जाओगे। सीता मुस्कुराती है और कहती है, प्रथम देवरानी, फिर सौत ! लेकिन राम कहते हैं, कि गृहत्याग कर वन में सपत्नी रहता हूँ मेरा छोटा भाई विवाहित है पर इस वन में अकेला है। तुमने भी इसके एकांगी स्वभाव पर ध्यान दिया है और उसे ही पहले प्रेम का दान दिया है। राम लक्ष्मण के गुणगान गाते हैं तब रमणी फिर से लक्ष्मण की ओर भेद-दृष्टि से देखती है। परंतु अब लक्ष्मण मौन रहेंगे क्योंकि रमणी बड़े भाई राम पर अनुरक्ता हुई। अब रमणी को दोनों ओर से लाले पड़े। रमणी को क्रोध आता है और वह अपना असली रूप धारण करती है।

वह अति रम्य रूप पल भर में

सहसा बना विकट - विकराल !

वह विलक्षणी शूर्पणखा थी। उसका ऐसा मायावी रूप देखकर जानकी हिल-डोल नहीं सकी और जड़ प्रतिमा-सी वे कुछ बोल नहीं सकी। राम की मुस्कान देख कर सीता संभल जाती है। लक्ष्मण शूर्पणखा से कहते हैं,

कि तू न फिर छल सके किसीको

मारूँ तो क्या नारी जान ;

विकलांगी ही तुझे करूंगा ,

जिससे छिप न सके पहचान !

लक्ष्मण शूर्पणखा के नाक कान काट लेते हैं और उसके पापी प्राण छोड़ देते हैं। शूर्पणखा और कृष्ण होकर वहाँ से भाग जाती है। सीताजी उदास हो जाती है, उनके हृदय में आतंकमयी शंका होने लगती है। गुप्त जी ने अंत में बनने वाली घटना की ओर इशारा किया है। इस घटना के कारण अंत में सोने की लंका मिट्टी में मिल जाती है। इस घटना में ही सीताहरण के बीज पड़े हुए हैं।

वातावरण को थोड़ा सहज करने के लिए कवि ने अंत में सीता और लक्ष्मण को नदी में पानी भरने के लिए जाते हुए बताया है। सीता लक्ष्मण को घड़ा उठा लेने के लिए कहती है। देवर और भाभी को जाते हुए राम प्यार से देख रहे हैं।

इस काव्य के नायक लक्ष्मण है। लक्ष्मण के स्वभाव के दो पहलू दिखाई पड़ते हैं, पहला व्यंग्यात्मक उपहास करने वाला और दूसरा कठोर। वह शूर्पणखा के साथ जब रात को बात करते हैं व्यंग्यात्मक उपहास करने वाला स्वभाव दिखाई पड़ता है। परंतु जब वह शूर्पणखा के नाक और कान काट उन्हें सजा देते हैं, तब उनके स्वभाव का कठोर पहलू देखने को मिलता है। शूर्पणखा के भी दो स्वरूप देखने को मिलते हैं एक लक्ष्मण को छलने के लिए धारण किया हुआ रमणी का रूप और दूसरा असली मायावी रूप। शूर्पणखा राक्षसी कन्या है उसके वर्णन से पता चलता है की राक्षसी कन्या और अरण्य कन्या अपनी इच्छा से जहां चाहे वहां किसी भी समय घूम फिर सकती थी जिसके साथ चाहे उसके साथ विवाह कर सकती थी। भारतीय संस्कृति में 'रामायण' के काल से शूर्पणखा जो राक्षसी कन्या है, उस नारी की स्वतंत्रता देखने को मिलता है। नारीवाद तो हमारे साहित्य पश्चिम साहित्य और संस्कृति के संपर्क से बहुत ही देर से आया। लेकिन भारतीय साहित्य में शूर्पणखा या हिडिम्बा जैसी कन्या का वर्णन वाल्मीकि या तुलसीदास ने किया हुआ है। शूर्पणखा राक्षसी है पर उसमें किसी पुरुष पर मोहित हो जाने वाला मानवीय स्त्री भाव गुप्त जी ने निरूपित किया है। भारतीय सभ्य संस्कृति में पति एक से अधिक पत्नी रखते थे जो दशरथ के पात्र में देखने को मिलता है। परंतु राम जो 'रामायण' के आदर्श पात्र है वह एक पत्नी व्रती है। इस प्रकार इस छोटे से खंडकाव्य के द्वारा हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है, जैसे कि उस समय की सभ्यता और संस्कृति कैसी थी, उस समय पृथ्वी पर राक्षस भी रहते थे, प्राण जाए पर वचन न जाए ऐसे संस्कार थे, छोटे बड़ों का बहुत ही आदर करते थे और उनकी सेवा में रत रहते थे। कन्या को अपना वर स्वयं चुनने की आज़ादी थी। राज कन्या के मुकाबले आरण्य कन्या या राक्षस कन्या को ज्यादा आजादी थी।

संदर्भ :

'पंचवटी', मैथिलीशरण गुप्त, प्रथम आवृत्ति १९७६, साकेत प्रकाशन

अंजली डी भरवाड

पी.एच.डी रिसर्चस्कॉलर

भाषा-साहित्य भवन, गुजराती विभाग,

गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.